आपने लिखा

काजल कुमार नन्दी जी, आपने लेख (स्वतंत्रता और सीखना, अंक-65) में गहरी दिलचस्पी दिखाई, धन्यवाद। पर मैं आपकी टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देना चाहता हूँ। पहली बात यह कि लेख का मकसद विद्यालय को दोष देना नहीं बल्कि सीखना-सिखाना की विधाओं पर प्रकाश डालना है। दूसरी बात, यहाँ तुलनात्मक अध्ययन का आधार जेंडर नहीं है जो कि आपकी टिप्पणी से प्रतीत हो रहा है। लेख का केन्द्र सीखना-सिखाना की विधि है, न कि लड़के-लड़कियों के जवाबों की तुलना।

लेख में विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं को उस वातावरण व गतिविधि के प्रभाव के सन्दर्भ में समझने का प्रयास किया जा रहा है जिसमें दोनों ही कक्षाएँ पढ़ना-लिखना सीख रही हैं। आपकी टिप्पणी से लग रहा है कि आप बच्चों को योग्यता की तुलना में देख रहे हैं बल्कि लेख पढ़ना-लिखना सीखने की परिस्थितियों और विधाओं की तुलना करने का प्रयास कर रहा है। साथ ही, लेखक मानता है कि कक्षाओं को लोकतांत्रिक कक्षा का स्वरूप दिया जाए जिसमें बच्चों को अपनी रुचि और गति के साथ सीखने का मौका मिले क्योंकि उससे ही रचनात्मकता को बढ़ावा मिलता है।

जितेन्द्र कुमार
होशंगाबाद, म.प्र.

(अंक-67 के 'आपने लिखा' कॉलम में प्रकाशित काजल कुमार नन्दी के पत्र पर जितेन्द्र कुमार की प्रतिक्रिया।)

स्टीवॅन वोगल का लेख 'जीवशास्त्र के कुछ भ्रम' पढ़ा। मुझे ऐसा लगता है कि जो शब्दावली जीवशास्त्र पढ़ाने वाले उपयोग में लाते हैं, उसका कोई मानक स्वरूप नहीं है। हरेक ने अपनी-अपनी शब्दावली गढ़ ली है। खासतौर से, यह समस्या हिन्दी की किताबों में दिखाई देती है। उदाहरण के लिए कृषि से सम्बन्धित शब्दावली भी भ्रम पैदा करती है। जैसे - जैविक खेती, प्राकृतिक खेती, नैसर्गिक खेती, परमा कल्चर, ऋषि खेती, टिकाऊ खेती। एक आम किसान के लिए इस शब्दावली से भ्रम ही पैदा होता होगा।

सुरेश दीवान
रोहना, होशंगाबाद

अंक 67 में 'जीवशास्त्र के कुछ भ्रम' पढ़ना शुरू किया ही था कि मित्र से हुई पर्यावरण पर बातचीत याद आई। मेरा कहना था कि 'पर्यावरण' शब्द जिस अवधारणा को ध्यान में रखकर रखा गया है, वह स्वयं उसके सभी आयामों को छूता नहीं है। मुझे लगता है कि पर्यावरण के बारे में जो समझ शिक्षा-जगत में ही नहीं बल्कि अन्य जगह भी बनती है वह है चारों ओर का बाहरी आवरण और इस तरह वह एक मिथ-सा बनकर अपना आधा-अधूरा विस्तार करता है। दरअसल, पर्यावरण दिक् (space) की तरह की चीज़ है, जो केवल बाहरी या चारों ओर भर नहीं है। जीवन और जगत में वह जितना बाहर है उससेकहीं अधिक वह उसका अन्दरूनी अवयव या हिस्सा बनता है। इस आन्तरिकता की समझ से अधिकतर लोग अनभिज्ञ रहते हैं।

म.प्र. सरकार ने सत्र 2008-2009 से पाठ्यक्रम में पर्यावरण को एक अनिवार्य विषय के रूप में शामिल किया जिस पर 100 अंक रखे गए। परीक्षा परिणाम पर इसके अंक असर नहीं डालेंगे। जो

पाठ्यपुस्तकें (कक्षा 11-12) मैंने देखी हैं वे काम चलाऊ, अव्यवस्थित तथा कई प्रकार के प्रश्न पैदा करने वाली हैं। विषय वस्तुसम्बन्धी आकर्षण तो उनमें नाम-मात्र का नहीं।

दूसरी बात जो मैं आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूँ वह यह है कि क्या पर्यावरण को एक स्वतंत्र विषय के रूप में पढ़ाया जाना ज़रूरी है और क्या इससे वांछित परिणाम पाए जा सकते हैं? भाषा के पाठों, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान के विषयों, ह्यूमेनिटीज़ के विषयों तथा अन्य ज्ञानानुशासनों में पर्यावरण की समझ जोड़कर पाठ्यक्रम तैयार क्यों नहीं किए जा रहे या किए जा सकते? उसे अलग विषय के रूप में, अवैज्ञानिक तरीके से, उपेक्षा का शिकार बनाकर जबरन विद्यार्थियों और शिक्षकों पर क्यों थोपा गया है? इस पर विस्तार से सोचकर और सभी विषयों के साथ पर्यावरण को योजनाबद्ध रूप से जोड़कर रखने से प्रकृति के प्रति हमारी समझ अधिक बेहतर ढंग से बढ़ेगी। नई पीढ़ी इससे अपेक्षाकृत अधिक लाभान्वित होगी, ऐसा मेरा विचार है।

मनोहर बिल्लौरे
जबलपुर, म.प्र.

इन्तज़ार के पारे के शिखर पर चढ़ने के बाद 'तापमापी में पारा क्यों' का सवाल हम खुद से ही कर रहे थे कि तभी 'संदर्भ' का नया अंक हाथ लगा। फिर 'गणक के साथ खोजबीन' की तो 'जीवशास्त्र के कुछ भ्रम' 'रंग, गन्ध और उत्तेजना' लिए हाज़िर थे। जब अनिवार्य शिक्षा कानून ने देश में प्रारम्भिक शिक्षा मातृ भाषा में हो, इस बहस को छेड़ दिया है तभी जाने-अनजाने में एलीथिया डी. रोज़ारियो ने 'स्कूली भाषा शिक्षण में द्विभाषा नीति' का ज़िक्र छेड़ कर इस द्विभाषा के द्वि-अर्थ की याद दिलवा दी जिसमें एक अर्थ मनोवैज्ञानिक है तो दूसरा अर्थ राजनैतिक है। राजस्थान में आजकल इसी राजनीति ने राजस्थानी भाषा को मातृभाषा के रूप में मान्यता के मुद्दे पर दाँत तीखे कर दिए हैं।

इस बार ऐसा लगा मानो 'संदर्भ' ने सारे भ्रमों को तोड़ने का बीड़ा उठाया हो। कुछ पलों के बाद स्वाद का भ्रम भी टूट गया। लेकिन गुलज़ार की कहानी, 'दस पैसे और दादी' पढ़कर बचपन की याद ताज़ा हो आई।

रमेश जांगिड़ (शिक्षक)
भिरानी, हनुमानगढ़, राजस्थान

सम्पर्क कीजिए

सदस्यता शुल्क

अंक न मिलने की सूचना

पते में बदलाव की सूचना

वितरण विभागः

एकलव्य, ई-10 बी.डी.ए. कॉलोनी
शंकर नगर, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 462016
फोन - 0755 - 2671017, 2550976
ई.मेलः circulation@eklavya.in